अपभ्रंश शैली

11 वीं सदी के आसपास से मध्यकालीन चित्र विशेषताओं वाले अनेक चित्रित पोथियां विभिन्न स्थलों पर चित्रित होने लगी जिन का विषय व स्थान के आधार पर निम्नलिखित उप शैलियों में अध्ययन किया जा सकता है

गुजरात शैली या गुर्जर शैली

वर्तमान गुजरात क्षेत्र से मिले इस शैली के अधिकांश क्षेत्रों का विषय हिंदू पौराणिक ग्रंथों से संबंधित है गुजरात में 11 वीं सदी से लेकर 16 वीं सदी तक के पोथीचित्र तथा लघु चित्र इसी प्रकार के हैं इस शैली के अधिकांश अहमदाबाद बड़ौदा संग्रहालय में सुरक्षित हैं

शैली की विशेषताएं

इस शैली में अजंता की तकनीक को तालपत्र पर उतारा गया

भित्ति चित्रण परंपरा तथा राजस्थानी व मुगल शैली चित्र परंपरा में आए परिवर्तनों को जानने का एकमात्र स्रोत गुजरात शैली को माना जाता है

परवर्ती राजस्थानी शैली में चित्रित प्रकृति जैसे पवन नदी समुद्र वनस्पति तथा बादलों का चित्रण गुजरात शैली के आधार पर किया गया मुंबई में स्थापित प्रगतिशील कलाकार ग्रुप में चित्रों का आधार इसी शैली को बनाया है

मुगल कला में उत्पन्न नवीन विशेषताओं का कारण भी गुजराती शैली को माना जाता है क्योंकि गुजराती शैली के केशव माधव तथा भी को मुगल चित्र शैली के प्रमुख कलाकारों में से थे

चित्रण विषय

हिंदू धार्मिक ग्रंथ रामायण महाभारत दुर्गा सप्तशती पुराण तथा कृष्ण लीलाओं से संबंधित साहित्य ग्रंथों में गीतगोविंद ऋतुसंहार वसंत विलास चौरपंचासिका आदि

नोट

कालिदास के ऋतुसंहार पर आधारित 79 चित्र प्राप्त हुए हैं चन्नालाल चमनलाल मेहता ने 1924 ईस्वी में वसंत विलास नाम की चित्रित पोथी के आधार पर गुजराती शैली वाला नाम दिया

जैन शैली

Scanned with CamScanner

अपभ्रंश शैली की प्रमुख विशेषताएं

राजराजेश्वर नामक विद्वान ने अपने ग्रंथ काव्यमीमांसा में इस शैली के चित्रों की निम्नलिखित विशेषताएं बतलाइ हैं

1 रिक्त स्थानों से निकली हुई पड़ परवल के आकार की आंखें 2 स्त्रियों की आंखों से कनपटी तक खींची गई रेखा

3 नुकीली नासिका

4 दोहरी चुनक

5 मुड़े हुए हाथ एवं ऐठी हुई अंगुलियां

6 आप्राकृतिक रूप से उभरी हुई छाती

7 लकड़ी के खिलौने के समान पशु पक्षी

8 प्राकृतिक दृश्यों की कमी

9 कमजोर रेखांकन

10 अंतराल में एक साथ कई दृश्यों का अंकन

11 चटक तथा स्वर्ण रंगों व स्याही काअधिकाधिक प्रयोग

12 - 15वीं सदी से हासियों के अंकरण की परम्परा का विकास

Scanned with CamScanner